रमेश कुमार यादव
हिन्दी - विभाग
डी. के. कॉलेज डुमरॉव बक्सर

मलिक मुहम्मद जायसी -

विक्रम धँसा प्रेम के बारा।
सपनावती कहँ गयउ पतारा ॥

आदि अंत जसि कथ्था अहै।
लिखि भाषा चौपाई कहै ॥

औ मन जानि कवित्त अस कीन्हा।
मकु यह रहै जगत महं चीन्हा॥

तन चितउर मन राजा कीन्हा।
हिय सिंहल बुद्धि पदमिनी चीन्हा ॥
गुरु सुवा जेहि पंथ देखावा।
बिनु गुरु जगत को निरगुन पावा ॥
नागमती यह दुनिया धंधा।
बांचा सोइ नएहि चित बंधा॥

प्रेम कथा एहि भाँति विचारहु।
बूझि लेउ जौ बूझै पारहु ॥

सरवर तीर पद्मिनि आई।
खोंपा छोरि केस मुकलाई॥

बरुनिबान अस ओपहँ, बेधो रन बन ढाख।
सौंजहि न सब रोवाँ, पंखिहि तन सब पाँख॥

ओहि मिलान जो पहुँचै कोई।
तब हम कहब पुरुष भल होई॥
है आगे परबत कै बाटा।
विषम पहार अगम सुठि घाटा॥

मानुस प्रेम भयऊ बैकुंठी।
नाहित काह छार भई मूठी॥
छार उठाय लीन्ह एक मूँठी।
दीन्ह उड़ाइ पिरिथिमी झूठी॥

मुहम्मद जीवन जल भरन रहट घरी के रीति।
घरी सो आई ज्यों भरी ढरी जनम गा बीति॥

होतहि दरस परस भा लोना।
धरती सरग भयउ सब सोना॥

साजन लेइ पठावा आयसु जाइ न मेट।
तन मन जोबन साजि कै देइ चली लेइ भेंट॥

पिउ सो कहहु संदेसड़ा हे भौंरा हे काग।
सो धनि बिरहै जरि मुई तेहिक धुँआ हम लाग।

नयन जो देखा कँवल भा निरमल नीर सरीर।
हँसत जो देखा हंस भा, दसन जोति नग हीर॥

फिर फिर रोइ कोइ नहीं बोला।
आधी रात बिहंगम बोला॥

बरसी मघा झँकोरी झँकोरी।
मोर दोउ नयन चुवइ जनु ओरी॥

मुहम्मद कवि कहि जोरि सुनावा।
सुना जो प्रेम पीर गा पावा॥

जे मुख देखा तेई हँसा।
सुना तो आये आसु॥

कवि बिआस रस कँवला पूरी।
दूरिहि निअर निअर भा दूरी॥

जेहि के बोल बिरह के घाया।
कहु केहि भूख कहाँ ते छाया॥

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी - विभाग, डी. के. कालेज
डुमरॉव बक्सर (बिहार)